DSC-A-1 (प्रथम सेमेस्टर)

Discipline Specific Course

Choice Based Credit System

बी. ए.

BHL-C-111

हिन्दी साहित्य का इतिहास

पूर्णांक - 100 सत्रांत परीक्षा -70

क्रेडिट - 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन - 30

पाठ्यक्रम

अधिगम परिणाम -

- हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा की समझ बढ़ेगी.
- हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन परम्परा का आलोचनात्मक मूल्यांकन करेंगे.
- साहित्य और समाज का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे.
- साहित्य और समाज के स्वरूप को समझ सकेंगे.
- भारतीय नवजागरण के औचित्य की समझ बढ़ेगी.
- आधुनिक गद्य विधाओं की समझ का विकास होगा.
- भारतीय समाज और संस्कृति के स्वरूप को समझने में यह पाठ्यक्रम सहायक होगा। आदिकाल,मध्यकाल ,रीतिकाल एवं आधुनिक कल के रचनाकरों के सहित्य एवं वैचारिक सरोकार को समझ सकेंगे। नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज की भूमिका को समझ सकेंगे।

इकाई-1

- काल-विभाजन एवं नामकरण
- आदिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएं-सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, लौकिक काव्य
- आदिकालीन हिन्दी साहित्य की विशेषताएं

इकाई-2

- भक्ति आंदोलन: सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- निर्गुण काव्यधारा
- सगुण काव्यधारा
- भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएं

इकाई-3

- रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- रीतिकाल की प्रमुख काव्यधाराएं- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त
- रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएं

इकाई-4

- हिन्दी नवजागरण,भारतेन्दुयुगीन साहित्य,द्विवेदी युगीन साहित्य
- छायावाद,राष्ट्रीय काव्यधारा,प्रगतिवाद,प्रयोगवाद,नयी कविता

इकाई-5

- भारतीय नवजागरण में आर्य समाज की भूमिका, दयानंद सरस्वती का हिन्दी गद्य और उसकी विशेषताएं, हिन्दी साहित्यकार के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द का मूल्यांकन, भारतेन्दुयुगीन हिन्दी कविता पर आर्य समाज का प्रभाव, द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता पर आर्य समाज का प्रभाव.
- आर्य समाज के प्रमुख हिन्दी कवि, नाटककार, कथाकार

सहायक ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
2. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास- डॉ. रामकिशोर शर्मा
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास - विश्वनाथ त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य की भूमिका-हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. हिंदी गद्य का इतिहास -रामचंद्र तिवारी
7. आर्य समाज का इतिहास भाग-5
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह